प्रसंगवश:

आलोक मेहता

पवित्र स्नान के साथ जरूरी मन की शुद्धता

इलाहाबाद के गंगा तट पर फिर वही विशाल कुंभ मेला। अनुमान के अनुसार 20 से 30 करोड़ लोग लगभग ढाई महीने के दौरान कुंभ मेले और गंगा-स्नान का पुण्य लाभ अर्जित करेंगे। भारतीय संस्कृति की मान्यता है कि ऐसे पवित्र स्नान से मन की शुद्धि एवं चरित्र का उत्थान होता है। ब्रह्मांड के पंच तत्व में जल का विशेष महत्व है। जन्म से मृत्यु तक सभी संस्कारों में जल का पहला स्थान है। जल की शुद्धि से शरीर शुद्ध होता है और शरीर की शुद्धि से मन की शुद्धि संपन्न होती है। धारणा यह है कि जिसका मन साफ हो वह कुकर्म नहीं करता। गंगा, यमुना, सतलुज, व्यास, रावी और चंद्रभागा नदियों के लिए अथर्ववेद में कहा गया है कि इन नदियों से दिव्य औषधियां प्राप्त होती हैं। पर्वत और वन क्षेत्रों की जड़ी-बूटियों का रस गंगा-यमुना जल में घुल जाता है और इस मिश्रित जल का चमत्कारी लाभ होता है। लेकिन ये धारणाएं आज के संदर्भ में कितनी सही हो सकती हैं? हिमालय की शृंखलाओं से बंगाल के गंगा सागर तक प्रदूषण ने जल को कितना शुद्ध रहने दिया है? गंगा-यमुना-सरस्वती के संगम तक पहुंचने वाले करोड़ों लोगों में से कितनों को शुद्ध जल के आचमन का लाभ मिल सकता है? गंगा-यमुना को पवित्र रखने की जिम्मेदारी क्या केवल सरकारों तक सीमित रह गई है? गंगा बचाओ अभियानकर्ता संगठन अवश्य सक्रिय हो रहे हैं। लेकिन गंगा, यमुना गोदावरी और शिप्रा नदियों में गंदगी तो विभिन्न इलाकों में बसे लोग या यात्रीगण ही डालते हैं। देश भर के शंकराचार्य, महामंडलेश्वर, साधु-संत इलाहाबाद, हरिद्वार, नासिक, उज्जैन के कुंभ मेलों में एकत्र होते हैं और निरंतर लोगों को ज्ञान बांटते हैं। फिर भी नदियों का जल अधिकाधिक अपवित्र होता जा रहा है। इसलिए कुंभ और मकर संक्रांति के पावन-पर्व पर क्या असली संकल्प पर विचार की जरूरत नहीं है?

औद्योगिक क्षेत्र के प्रदूषण पर नियंत्रण के लिए सरकारों पर दबाव बनाया जा सकता है लेकिन शहरों और गांवों की गंदगी, व्रत-त्योहारों पर लगाई गई मूर्तियों, इनसानों और पशुओं के मृत शरीर जितने बड़े पैमाने पर नदियों में बहाए जा रहे हैं, उसके बाद नदियों का पानी कितना शुद्ध रह सकता है?

धार्मिक भावनाओं से हटकर जल संसाधनों के सही उपयोग पर संपूर्ण भारतीय समाज और सरकारी स्तर पर विचार की जरूरत है। इंदिरा गांधी के सत्ताकाल के बाद पिछले लगभग 30 वर्षों के दौरान केंद्र सरकार में जल संसाधन मंत्रालय को महत्वहीन-सा बना दिया गया। कभी किसी मंत्री को अतिरिक्त प्रभार के रूप में मंत्रालय सौंपा गया तो कभी केवल कैबिनेट दर्जे की शोभा के रूप में दायित्व सौंपा गया। इस चक्कर में सिंचाई की बड़ी योजनाएं भी ठीक से क्रियान्वित नहीं हो पा रही हैं। योजना आयोग के दस्तावेजों, सम्मेलनों और वार्ताओं के बावजूद पवित्र पावन नदियों की कृपा से किसानों के कल्याण अथवा बाढ़ के प्रकोप से मुक्ति के लिए समुचित कार्यक्रम क्रियान्वित नहीं हुए। गंगा, यमुना, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र और कावेरी की गौरव गाथा गाने वालों ने सही अर्थों में उनके अथाह जल के उपयोग के लिए अभियान नहीं चलाए। देश में विशाल जल भंडार होने के बावजूद विशेषज्ञ चेतावनी देते रहते हैं कि आने वाले वर्षों में पीने के पानी का गंभीर संकट हो सकता है। यहां तक कि पानी के लिए युद्ध जैसे संघर्ष की स्थिति बन जाएगी। दूसरी तरफ शहरी क्षेत्रों में पेयजल उपलब्ध कराने के लिए देशी-विदेशी कंपनियों ने जल-प्रबंधन को 'उद्योग-धंधे' के रूप में पेश कर दिया है। नदियों के पानी पर राज्यों के बीच राजनीतिक विवादों ने अलग मुसीबत पैदा की है। तमिलनाडु, आंध्र, कर्नाटक, पंजाब, हरियाणा, मध्य प्रदेश, गुजरात जैसे राज्यों के बीच वर्षों से खींचातानी जारी है। दुनिया के किसी देश में कोई नदी किसी राज्य की संपत्ति नहीं मानी जाती है। यहां विभिन्न प्रदेशों से बहकर निकलने वाली नदियों के जल को राष्ट्रीय संपदा की तरह स्वीकारने के बजाय अपने हक के लिए आंदोलन खड़े कर दिए जाते हैं। कहीं बांध बनाने का विरोध होता है तो कहीं बांध बनने के साथ लोगों के पुनर्वास पर वर्षों तक आंदोलन जारी रहता है। इसमें कोई शक नहीं कि बांधों के निर्माण के साथ क्षेत्र के ग्रामीणों के पुनर्वास की व्यवस्था सुनियोजित ढंग से होनी चाहिए। लेकिन इसके लिए केंद्र और राज्य सरकारों के बीच सही तालमेल और प्रशासनिक ईमानदारी अपरिहार्य है। सरकारें इस काम में समर्पित सामाजिक संस्थाओं और कार्यकर्ताओं का उपयोग नहीं कर सकतीं? पुनर्वास की योजनाओं का क्रियान्वयन ऐसी संस्थाओं को ही क्यों नहीं सौंपा जा सकता है? लेकिन असली समस्या राजनेताओं और ठेकेदारों के बीच हिस्सेदारी की है। वे जल प्रबंधन और पुनर्वास के काम में भी अपना लाभ चाहते हैं। यही हाल उद्योगों का है। पर्यावरण मंत्रालय बन जाने के बावजूद विभिन्न प्रदेशों में कारखानों का जहरीला रसायन नदियों में मिल रहा है। इससे क्षेत्र में इनसान ही नहीं, पशु और जल जीव-जंतु तक बीमारी और मृत्यु के शिकार हो रहे हैं। लेकिन 'सूर्य' देवता को नमन करते हुए जल अर्पित करने वाले छोटे-बड़े नेता या धनपति इसकी पवित्रता को अक्षुण्ण रखने की कतई चिंता नहीं करते। मतलब, हर स्तर पर पाखंड और प्रदूषण जारी है। ऐसी स्थिति में करोड़ों की पूजा-अर्चना और अरबों रुपयों के खर्च के बावजूद 'गंगा-यमुना' पहले से ज्यादा मैली और प्रदूषित होती रहेंगी।

alokmehta@nationalduniya.com

…र्यावरण मंत्रालय बन जाने के …वजूद विभिन्न प्रदेशों में …रखानों का जहरीला …सायन नदियों में मिल रहा … इससे क्षेत्र में इनसान ही …ी, पशु और जल जीव-…तु तक बीमारी और मृत्यु के …िकार हो रहे हैं। छोटे-बड़े …ता या धनपति इसकी …त्रता को अक्षुण्ण रखने …तई चिंता नहीं करते। …स्थिति में करोड़ों की …-अर्चना और अरबों …यों के खर्च के बावजूद …ा-यमुना' पहले से ज्यादा …और प्रदूषित होती रहेंगी